Vishal
[redacted]

Q. भारत में नगरीकरण की वृद्धि तथा इसके प्रवृत्तियों का वर्णन करें।

ANS किसी ग्राम्य प्रधान समाज के नगरीय प्रधान में रूपान्तरण की प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं। इसमें दो बातों का बोध होता है। — (अ) - नगरीय अधिवासों में रहने वाले लोगों की जनसंख्या में वृद्धि, एवं (ब) - नगरीय अधिवासों में रहने वाले लोगों की जनसंख्या के प्रतिशत में वृद्धि।

भारत की जनसंख्या में भारी वृद्धि होने के साथ-साथ नगरीय जनसंख्या में भी तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है। विश्व में चीन के बाद दूसरा जन संकुल क्षेत्र होने के नाते भारत के इस तेजी से बढ़ते नगरीकरण का क्षेत्रीय और विश्व व्यापी असर है। भारत की नगरीय जनसंख्या द्वारा विश्व के नगरीय जनसंख्या के एक बड़े भाग का निर्माण किया जाता है। इसका अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि विश्व का हर बारहवाँ एवं विकासशील देशों का हर छठवाँ नगरीय क्षेत्रों में रहने वाला व्यक्ति भारतीय है।

I — नगरीय जनसंख्या : वृद्धि की प्रवृत्तियाँ :—

पिछले 100 वर्षों में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि तीन चरणों में हुई है।

(i) मन्द नगरीकरण का काल (Period of slow Urbanization) : इसके अंतर्गत 1901 - 31 तक के समय को सम्मिलित किया जाता है जिस दौरान अकाल, महामारी आदि के कारण नगरीकरण की वृद्धि दर में या तो ह्रास देखा गया अथवा वृद्धि का औसत प्रति दशक 1% से भी कम रहा। इन तीस वर्षों में नगरीकरण प्रतिशतांक में 0.36% की बढ़ोत्तरी देखी गयी।

(ii) मध्यम नगरीकरण के काल (Period of Medium Urbanization) : इसके अंतर्गत 1931 - 61 तक के समय को सम्मिलित करते हैं, जिस बीच नगरीय जनसंख्या में 45.46 मिलियन (135.86%) की वृद्धि हुई जबकि नगरीकरण का प्रतिशत 12.2 से बढ़कर 18.3 (50%) पहुंच गया। देश में यह पंचवर्षीय योजनाओं के जरिये नियोजित विकास के शुरुआत का समय था जिससे आधुनिक पद्धति के बड़े उद्योगों की स्थापना शुरू हुई। इससे नगरीय विकास के लिए सुदृढ़ आधार प्राप्त हुआ।

Scanned with CamScanner

भारत में नगरीकरण 1901–2001

	वर्ष	नगरों की संख्या	कुल जनसंख्या में प्रतिशत	दशकीय वृद्धि दर (% में)	वार्षिक वृद्धि दर %
1.	1901	1827	10.84	–	–
2.	1911	1815	10.29	0.35	0.03
3.	1921	1949	11.18	8.27	0.79
4.	1931	2072	12.00	19.12	1.75
5.	1941	2250	13.86	31.97	2.77
6.	1951	2843	17.30	41.42	3.47
7.	1961	2365	17.97	26.41	2.34
8.	1971	2590	19.19	38.23	3.21
9.	1981	3378	23.34	46.14	3.83
10.	1991	3768	25.72	36.19	3.09
11.	2001	5161	27.78	31.35	2.76

(iii) <u>तीव्र नगरीकरण का काल (Period of Rapid Urbanization)</u>: 1961 के बाद आर्थिक विकास की गति में हुए अंत के साथ-साथ नगरीय विकास की गति भी तीव्र होने लगी। परिणाम स्वरूप 1961–2001 के बीच देश की नगरीय जनसंख्या 78.93 मिलियन से बढ़कर 285.35 मिलियन पहुँच गयी (वृद्धि 261.5%)। इसी बीच नगरों की संख्या में 2300 (85.2%) और नगरीकरण अनुपात में 9.5% (51.8%) की बढ़ोत्तरी देखी गयी। इस वृद्धि का महत्व इस दृष्टि से और भी बढ़ जाता है कि देश में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि जन्मदर के अधिक होने और मृत्यु दर के घटाव के कारण तेजी से हो रही है। वास्तव में देश आज तीव्र नगरीकरण के दौर से गुजर रहा है, जिसके द्वारा उद्योगों एवं व्यापार में वृद्धि के कारण नगरों की और जनसंख्या के आकर्षण में वृद्धि हुई है।

Scanned with CamScanner

भारत में नगरों की संख्या एवं उनका आकार — भारत में नगरों की संख्या में बराबर वृद्धि हो रही है। 1901 में नगरों की संख्या 1834 थी, जो 2001 में बढ़कर 5161 तक पहुँच गई। प्रति दशाब्दी नगरों की संख्या में परिवर्तन का कारण नगरों की परिभाषा में परिवर्तन किया जाना भी रहा है। 1911 व 1961 के वर्षों को छोड़कर शेष सभी वर्षों में नगरों की संख्या में वृद्धि हुई है।

विदित होता है कि प्रथम व द्वितीय वर्ग के नगरों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। इससे यही निष्कर्ष है कि नगर अपने आकार में हर दशाब्दी में जनसंख्या में भारी वृद्धि कर रहे हैं। यह बड़े आकार के नगर छोटे नगरों से भी जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। पंचम व छठे आकार के नगर अपने-अपने आकारों में अधिक वृद्धि की ओर संकेत करते हैं। इनकी संख्या में पिछले 30 सालों में काफी कमी आई है। प्रथम 4 वर्गों में नगरों की संख्या के बढ़ने के साथ-साथ कुल नगरों में इनका प्रतिशत भी बढ़ा है। इस प्रकार बड़े व मध्यम आकार के नगर अपनी जनसंख्या में अपार वृद्धि कर रहे हैं। प्रथम वर्ग के नगरों की संख्या पिछले 80 वर्षों में 9 गुनी अधिक हो गई है, जबकि द्वितीय वर्ग के नगरों की संख्या 6 गुनी, तृतीय वर्ग के नगरों की संख्या 5 गुनी तथा 4 वर्ग के नगरों की संख्या तीन गुनी अधिक हो गई है।

वर्ष	I 100,000 से अधिक	II 50,000 से 99,999	III 20,000 से 49,999	IV 10,000 से 19,999	V 5000 से 9,999	VI 5000 से कम
1901	24	42	135	393	750	490
1911	23	39	142	364	713	495
1921	28	45	153	370	741	583
1931	33	54	193	439	806	524
1941	47	77	246	505	931	404
1951	72	95	330	621	1146	578
1961	102	129	449	732	739	179
1971	145	178	570	847	641	150
1981	216	270	739	1048	742	230
1991	296	341	927	1135	725	185

Scanned with CamScanner

देश के लगभग सभी राज्यों में स्वतंत्रता के बाद प्रथम आकार के नगरों की अपनी संख्या में भारी वृद्धि अंकित की है। नगरों की सबसे अधिक संख्या 42 उत्तर प्रदेश में मिलती है। इसके बाद आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश का स्थान आता है। 1951 से 1991 के वर्षों में असम, मेघालय, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड को छोड़कर शेष सभी राज्यों में द्वितीय वर्ग के नगरों की संख्या में वृद्धि हुई है। ऐसी ही प्रवृत्ति तृतीय वर्ग के नगरों के साथ मिलती है। चतुर्थ वर्ग के नगरों की संख्या में वृद्धि आंध्रप्रदेश, केरल, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, राजस्थान में अधिक मिलती है। इस वर्ग के अनेक नगर 1991 में तृतीय वर्ग के 10 नगर स्थापित हो गए। चतुर्थ वर्ग के नगरों में सबसे अधिक वृद्धि उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व बिहार में हुई है। पंचम वर्ग के नगरों की तस्वीर भारत के राज्यों में बड़ी विविधता लिए हुए है। अनेक राज्यों में इनकी संख्या में कमी हुई है इसका प्रमुख कारण इन नगरों का अपने आकार में वृद्धि कर लेना है। 1971-81 की दशाब्दी में पंजाब, मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश में इन नगरों की संख्या सबसे अधिक बढ़ी है। छठे वर्ग के नगरों में कमी का कारण इन नगरों की अपनी आकार-वृद्धि है। इस वर्ग ने अनेक नए नगरों को शामिल किया है। उत्तरप्रदेश में इस वर्ग के नगरों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि हुई है।

1. नगरों की जनसंख्या का उनके वर्ग के अनुसार वितरण :-

हमारे देश में पिछले 100 वर्षों में प्रथम वर्ग के नगरों ने अपनी जनसंख्या में भारी वृद्धि अंकित की है। द्वितीय व तृतीय वर्ग के नगरों में रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत स्थिर रहा है, शेष तीनों वर्गों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत घटा है।

(i) (I) वर्ग के नगर ⟶ 1901 में 24 नगरों में कुल नगरीय जनसंख्या का 26% भाग निवास करता था। 1951 में इनकी संख्या बढ़कर 74 तथा 44.63% हो गई। 1991 में, अर्थात पिछले चालीस वर्षों में इनकी संख्या बढ़कर फिर तीन गुनी हो गई। इस वर्ष ऐसे 296 नगर थे, जिनमें देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 65.20% भाग निवास करता था। 1981 में एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले 216 नगर थे, जिसमें देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 60.42% भाग निवास करता था।

Scanned with CamScanner

1981-91 की दशाब्दी में देश की नगरीय जनसंख्या में जो वृद्धि हुई है, उसका 78.48% अकेले इस वर्ग के नगरों में बढ़ा है। कुल नगरीय जनसंख्या की वृद्धि देश में 564.5 लाख थी, जिसमें से 443 लाख जनसंख्या अकेले इन नगरों में बढ़ी। आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, केरल, मध्यप्रदेश, पंजाब, उत्तरप्रदेश और पांडिचेरी को छोड़कर शेष सभी राज्यों में इन नगरों की जनसंख्या में वृद्धि 50% से कम रही है। केरल के इन नगरों की सबसे अधिक वृद्धि की दर 100.85% मिलती है।

1981-91 के दशक में इन नगरों की वृद्धि 46.87% रही। त्रिपुरा में सबसे कम वृद्धि 19.25% रही। बिहार में यह वृद्धि 26.64% थी। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिमबंगाल, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात व कर्नाटक राज्यों में ऐसे नगरों की संख्या 9 से अधिक थी। कुल मिलाकर यहाँ 214 नगर स्थित थे।

(ii) <u>II वर्ग के नगर</u> → इस वर्ग में 50,000 से 1 लाख जनसंख्या वाले नगरों को शामिल किया गया है। इन नगरों की संख्या 1901 में 42 थी, जो 1951 में बढ़कर 95 तथा 1991 में 341 हो गई। 1951-91 के ~~चालीस~~ चालीस वर्षों में 246 ऐसे नए नगर इस वर्ग में बढ़ गए हैं। इनकी संख्या के अतिवृद्धि के बावजूद यह नगर देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 10.95% भाग रखते हैं। इनकी संख्या में वृद्धि होते हुए भी इनका देश की कुल नगरीय जनसंख्या में योगदान नहीं बढ़ पा रहा है। 1981-91 के दशक में कुल वृद्धि का 9.07% ही इन नगरों में बढ़ा, यद्यपि इस दौरान 51.2 लाख जनसंख्या इन नगरों में और बढ़ गई। 1971-81 की अपेक्षा 1981-91 के दशक में इन नगरों की वृद्धि दर में कमी आ गई।

बिहार, हरियाणा, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पंजाब और राजस्थान में 1981-91 की दशाब्दी में इन नगरों की जनसंख्या में वृद्धि 50% से अधिक मिलती है। इन राज्यों में इस वर्ग के नगरों की संख्या में काफी वृद्धि देखने को मिलती है। सबसे अधिक वृद्धि 99.64% हरियाणा में तथा सबसे कम वृद्धि आन्ध्रप्रदेश में 11.33% मिलती है। पश्चिम बंगाल में तो इनकी जनसंख्या में 21.08% की कमी आई है।

III वर्ग के नगर → इन नगर 20,000 से 49,999 के बीच जनसंख्या रखने वाले हैं। इनकी संख्या पिछले 90 वर्षों में 135 से बढ़कर 927 तक पहुँच गई है। 1951 के बाद इन नगरों की संख्या में अपार वृद्धि हुई है। कुल नगरीय जनसंख्या में इनका योगदान लगातार घट रहा है। 1981-91 की दशाब्दी में 50% से अधिक वृद्धि हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, उत्तरप्रदेश व दमन-दीव में ही मिलती है। यह वृद्धि अनेक नए नगरों का जन्म तथा पुराने नगरों की जनसंख्या में अधिक वृद्धि के कारण है। केरल, नागालैंड, पंजाब, सिक्किम और पांडिचेरी में इन नगरों की जनसंख्या में कमी देखने में आई है। इन नगरों की सबसे अधिक संख्या 129 उत्तरप्रदेश में थी इसके बाद महाराष्ट्र (103) का स्थान आता है। केन्द्र शासित प्रदेशों में पाण्डिचेरी व दमन-दीव के अलावा इस वर्ग का कोई भी नगर नहीं था।

IV वर्ग के नगर → 10000 से 19,999 की जनसंख्या वाले नगरों की संख्या पिछले 90 वर्षों में 393 से बढ़कर 1135 तक पहुँच गई है। पिछले 20 वर्षों में इनकी संख्या 212 अधिक हो गई है। इनकी संख्या में वृद्धि होते हुए भी कुल नगरीय जनसंख्या में इनका योगदान बराबर घट रहा है। 1971 में यह योगदान 10.94% था, जो 1991 में घटकर 7.77% रह गया। 1981-91 में वृद्धि दर 10.72% थी जबकि 1971-81 में यह वृद्धि दर 27.54% रही थी। इस दशाब्दी में कुल नगरीय जनसंख्या वृद्धि का 2.84% इन नगरों में बढ़ा जो सबसे कम था। सबसे अधिक वृद्धि गोवा में 171.24% तथा सबसे कम गुजरात में 0.70% अंकित की गई। इनमें 50% से अधिक वृद्धि रखने वाले राज्य गोवा, मिजोरम, केरल, मेघालय, त्रिपुरा, पांडिचेरी के अलावा कहीं भी इस वर्ग के नगर नहीं मिलते हैं। उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश में ऐसे नगरों की संख्या सबसे अधिक है। राज्यों में सिक्किम में ऐसा एक भी नगर नहीं है।

V वर्ग के नगर → इसमें 5000 से 9999 की जनसंख्या वाले नगरों को रखा गया है। इनकी संख्या में पिछले 90 वर्षों में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। 1951 में इनकी संख्या सबसे अधिक थी इसके बाद 1981 को छोड़कर शेष सभी वर्षों में इनकी संख्या घटी है। 1991 में इनकी संख्या 725 थी जिसमें कुल नगरीय

Scanned with CamScanner

जनसंख्या का केवल 2.60% भाग निवास कर रहा था। 1961 के बाद से इनका योगदान आधे से भी कम हो गया है। 1971-81 में इनकी जनसंख्या 17.82% बढ़ी, जबकि 1981-91 के दशक में 1.27% घट गई। 1981-91 के दशक में इन नगरों का योगदान ऋणात्मक रूप से रहा। 1981-91 के दशक में 50% से अधिक वृद्धि अंकित करने वाले राज्य मेघालय, त्रिपुरा, गोवा, मणिपुर, पश्चिम बंगाल, और लक्षद्वीप हैं, जबकि पंजाब, आन्ध्रप्रदेश, नागालैंड, उड़ीसा, गढ़वाल दिल्ली, महाराष्ट्र, हरियाणा, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, अरुणाचल प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में इन नगरों की जनसंख्या में कमी देखने में आई। सबसे अधिक वृद्धि 130.49% मेघालय में अंकित की गई तथा सबसे अधिक कमी 57.57% पंजाब में पायी गई। उत्तरप्रदेश (210) और मध्यप्रदेश (130) में इस वर्ग के नगरों की संख्या अधिक है।

(VI) **छठे वर्ग के नगर** → 5000 से कम जनसंख्या रखने वाले नगरों की संख्या 1951 के बाद से कम प्रतीत हो रही है। 1981 को छोड़कर शेष सभी वर्षों में स्वतंत्रता के बाद इन नगरों की संख्या में कमी देखने में आयी है। 1981 में इन नगरों की संख्या 230 थी, जो घटकर 1991 में 185 रह गई। कुल मिलाकर 90 वर्षों में इन नगरों की संख्या 305 कम हो गई है। देश की नगरीय जनसंख्या में इनका प्रतिशत घट रहा है। इन नगरों ने 1971-81 के दशक में 65.73% की अप्रत्याशित वृद्धि अंकित की, जबकि 1981-91 के दशक में इनकी जनसंख्या में 21.70% की कमी हो गई। देश की नगरीय जनसंख्या में इनका योगदान पिछले दशक में 0.30% घट गया। लगभग 20 राज्यों में इस प्रकार के नगर थे, जिनमें से 9 राज्यों मणिपुर, उत्तरप्रदेश, पंजाब, आन्ध्रप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, सिक्किम, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल ने इन नगरों की जनसंख्या में सबसे अधिक कमी अंकित की। 1991 में सबसे अधिक वृद्धि 58.40% मध्यप्रदेश में तथा सबसे कम 12.29% हिमाचल प्रदेश में अंकित की गई। अरुणाचल प्रदेश, केरल, मेघालय, नागालैंड, दिल्ली को छोड़कर शेष सभी केन्द्र-शासित प्रदेशों में इस वर्ग का ऐसा एक भी नगर नहीं था।

Scanned with CamScanner

भारत में 1 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों का वितरण

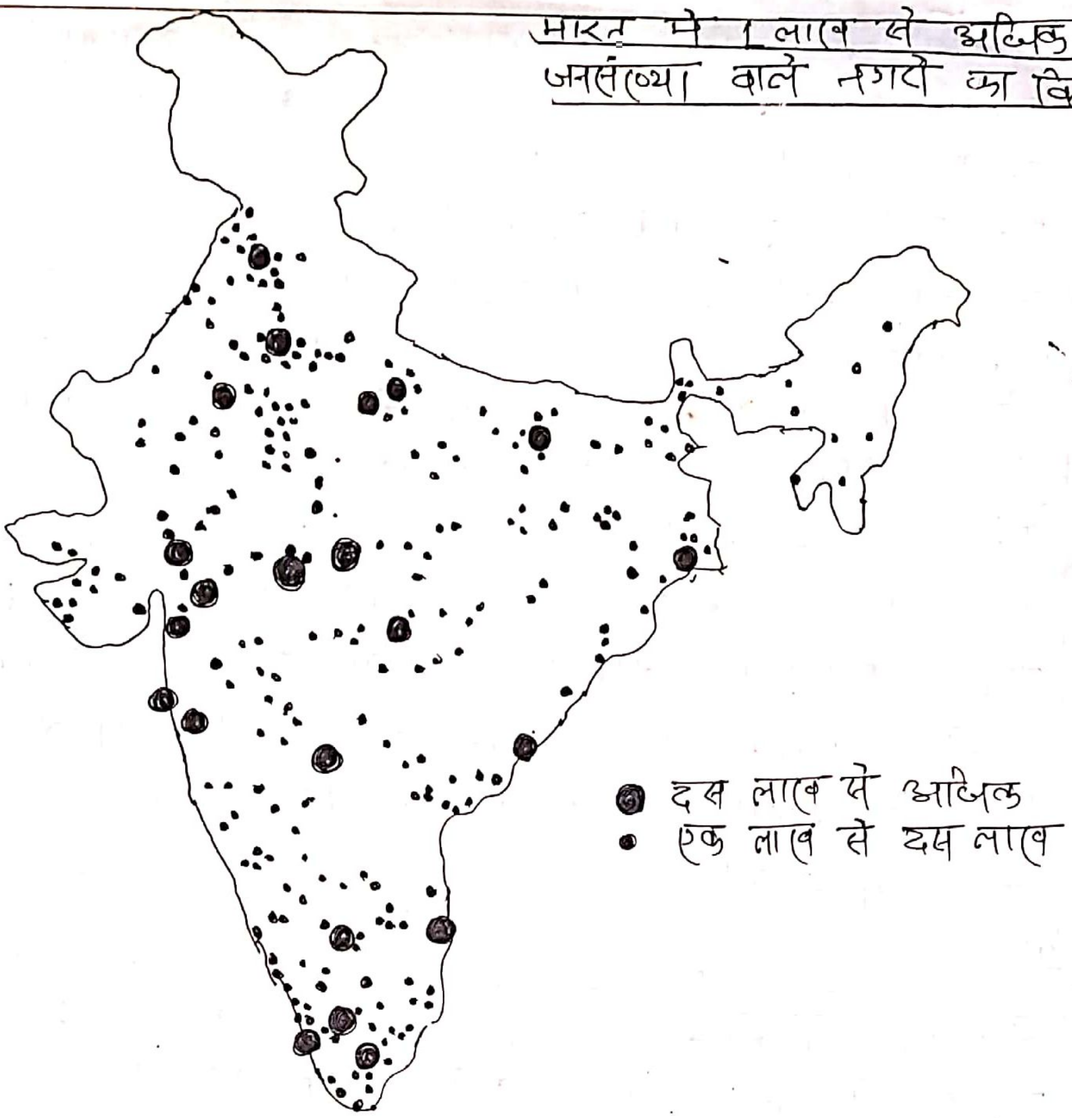

Scanned with CamScanner